



जबलपुर मे सुख का सारथी हुआ सुखदेव



जलग्रहण प्रबंधन का उद्देश्य न सिर्फ देश में जल एवं मृदा के संरक्षण एवं संवर्धन का कार्य है बल्कि विभिन्न रूप से आजीविका मूलक गतिविधियों के द्वारा ग्रामीणों के आय में सतत् सृजन कर सामाजिक एवं आर्थिक सुधार करना भी है, जिसके तहत विभिन्न आजीविका मूलक कार्यों का संचालन एक अथवा समूहों के रूप में किया जाता है। जिला रायगढ़ के IWMP- 09 सिंघनपुर वि.ख. खरसिया से 20 कि. मी. पूर्व मे जबलपुर गांव है जहां सुखदेव सारथी निवास करते है। लगभग 40 की उम्र के सुखदेव को तीन भाइयों मे थे , और उन्हें पौने तीन एकड़ एकड भूमि विरासत मे मिली । एक फसली और लगभग बंजर भूमि गुजर बसर के लिए अपर्याप्त थी। कृषि मजूदरी और यहां वहां काम करते हुए सुखदेव का जीवन संकटों से घिरा था।

वर्ष 2011-12 मे जबलपुर जलग्रहण कार्यक्रम शुरू हुआ। इसके तहत भूमि एवं जल संरक्षण के कार्य हो रहे थे, मगर स्वचयं की भूमि कम होने के कारण इसका सुखदेव को इसका विशेष लाभ नहीं था। वह तो आपने एक रिश्तेदार की तरह वह भी मुर्गी का धंधा करना चाहता था। एक दिन जलग्रहण समिति की बैठक के दौरान पीआइए सदस्य श्री अष्वनी चौहान से उसने अपने मन कर बात रखी। श्री चौहान ने उसे प्रोत्साहित किया । उसे बताया कि परियोजना के तहत जलग्रहण समिति के माध्यम से आसान ऋण दिया जा सकता था।

जलग्रहण समिति जबलपुर ने, उसके नवीन उद्यम के लिए 25000 रु की प्रारंभिक सहायता की। अपने घर के आंगन मे सुखदेव ने मुर्गियों का बाड़ा तैयार किया और पहली बार वह 200 चुजे ला कर मुर्गी पालना शुरू किया। पत्नी एवं पुत्र ने भी सहयोग किया। चार माह के भीतर पहले ऋण को चुकाते हुए सुखदेव ने मामूली मुनाफा हासिल किया। पर इस प्रक्रिया मे उसका आत्मविश्वास बढ़ा, व्यावसायिक संपर्क बने, अनुभव हुआ तथा व्यवसाय मे उपयोग होने वाले कुछ उपकरण एवं सामग्री इकट्ठा हो गई।

शीघ्र ही सुखदेव पुनः ऋण की मांग के साथ हाजिर था। इस बार जलग्रहण समिति ने स्व सहायता समूहों की सहकारी समिति के सहयोग से पचास हजार रुपये का ऋण दिलाया। सुखदेव ने इस बार बाड़े का आकार बढ़ाकर 1500 चूजे डाले। सूझ बूझ, परीश्रम और आत्मविश्वास के साथ उसने आगामी दो चक्र मे 2,30,000 (दो लाख तीस हजार रूपया) कौं कमाई की। मुर्गी विक्रेता अब उसके घर का पता पूछते हुए आने लगे।

सालभर के भीतर सुखदेव की किस्मत पलट चुकी है। वह अगले चक्र की तैयारी में है। उसके बाड़े का क्षेत्रफल लम्बाई 40 फीट और चौड़ाई 20 फीट है। उसने बाड़े के पास एक छोटा तालाब खुदवा रहा है जिसमें मछली पालन किया जाएगा। पीआए श्री चौहान के मुताबिक यह योजना इसलिए है कि मुर्गियों की बीट मछलियों के लिए उच्च गुणवत्ता का भोजन है और इससे वे तीव्रता से



वृद्धि करती हैं। इस मुनाफे का एक अंश अपनी एकफसली भूमि पर सिचाई व्यवस्था के लिए भी खर्च किया। लगभग 50000 रुपये की लागत से बोर सिचाई हेतु बोर उपलब्ध करवाया। नतीजतन अब उस भूमि पर साल भर फसल लेने की स्थिति है।

सुखदेव की प्रेरणा से ग्राम में 4 अन्य परिवार भी मुर्गी पालन शुरू कर चुके हैं तथा सुखदेव से मार्गदर्शन और बाजार व्यवस्था पा रहे हैं। ग्राम में और भी परिवार इच्छुक हैं। पीआइए जनमित्रम कल्याण समिति की योजना इन्हें एक मुर्गीपालक उत्पादन सहकारी समिति में परिवर्तित करने की है। अनुसूचित जाति का यह कृषक अपनी आर्थिक सफलता और गांव में बढ़े हुए महत्व से अभिभूत है और इसका सारा श्रेय गांव में चल रहे जलग्रहण कार्यक्रम और अपनी जलग्रहण समिति के अध्यक्ष श्री हेतराम राठिया एवं पीआइए सदस्य श्री अष्वनी चौहान को देता है।

-----000-----

Success is a Journey not a Destination.....